

लड़ाकी स्त्री. (देश.) व्यर्थ में लड़ाई-झगड़ा करने वाली।

लड़ाना स.क्रि. (देश.) 1. एक दूसरे का आपस में झगड़ा कराना 2. दो पक्षों में युद्ध कराना 2. किन्हीं दो पक्षों को विवाद में उलझाना 4. पहलवानों की कुश्ती करना 5. मनोरंजन हेतु दो सांडों को लड़ाना 6. किसी सफलता के लिए या किसी समस्या के समाधान हेतु कोई युक्ति निकालना, बुद्धि लड़ाना 7. लाड़ प्यार जैसे-लाड़ लड़ाना।

लड़ी स्त्री. (देश.) 1. एक ही प्रकार की वस्तुओं की एक तार में या एक रस्सी में क्रम से गुंथी हुई पंक्ति, माला जैसे- बिजली (बल्बों आदि) की लड़ी, फूलों की लड़ी 2. किसी विषय पर देर तक चलने वाली बातों की शृंखला जैसे- बातों की लड़ी।

लड्डुआ पुं. (देश.) 1. विशेष रूप से बेसन या बेसन की बूँदी से बना गोलाकार एक मिष्ठान्न, लड्डू 2. मोदक।

लड़ैता¹ वि. (देश.) 1. बहुत प्रिय, लाड़ला, दुलारा 2. जो घर में लाड़-प्यार के कारण बहुत बिगड़ गया हो, धृष्ट, शोख 3. युद्ध में बहुत पराक्रम से लड़ने वाला, योद्धा 4. लड़ाकू 5. लड़ने में कुशल।

लड्डू पुं. (तद्.) बेसन में बनाई गई एक प्रसिद्ध गोलाकार मिठाई जैसे- बूँदी के लड्डू।

लड़ा पुं. (देश.) 1. बैलों द्वारा खींचे जाने वाली लकड़ी की वह गाड़ी, जिसमें अन्नादि के भार को ढोया जाता है, बैलगाड़ी 2. लड़िया स्त्री. छोटी बैलगाड़ी या सगगड़ जिसमें चार-पाँच लोग बैठकर कोई आसपास की यात्रा कर सकते हैं।

लड़िया स्त्री. (देश.) 1. बैलगाड़ी, बोझ ढोनेवाली बैलगाड़ी 2. पुं. (देश.) वह दलाल जो धोखे से दुकानदार से उसका माल ग्राहकों को बिकवाता है।

लड़ियापन पुं. (देश.) लड़िया होने की स्थिति, अवस्था अथवा भाव 2. चालाकी।

लत स्त्री. (तद्.) 1. दुर्व्यसन में प्रवृत्ति, बुरी आदत 2. अनावश्यक रूप से किसी वस्तु के सेवन की आदत।

लतखोर वि. (देश.+फा.) 1. जो स्वयं के दोषजन्य कर्मों के कारण बार बार दूसरों से लात खाने या दुर्दशा भोगने का आदी हो फिर भी अपनी आदत से बाज न आये 2. जो दूसरों की लात खाने पर या दूसरों के द्वारा दंडित होने पर ही अपने दुष्कर्म को छोड़ने के लिए तैयार हो बेशर्म, निर्लज्ज 3. पायदान।

लतमर्दन पुं. (देश.+तत्.) 1. पैरों से किसी वस्तु का मर्दन 2. पैरों से किसी चीज को कुचलना, रौंदना, मारना।

लतर स्त्री. (तद्.) 1. बल्लरी, बेल, लता दे. लता।

लतांतराल पुं. (तत्.) 1. लताओं का अंतराल भाग 2. फैली हुई लताओं के बीच का स्थान 3. लताओं के झुरमुट में से मध्य का भाग, लता कुंज।

लता स्त्री. (तत्.) 1. भूमि पर फैलने या किसी वृक्ष, दीवार, बाँस आदि के आधार पर ऊपर की ओर फैलने वाला हरी पत्तियों से युक्त पौधा, बेल, वल्लरी जैसे- अंगूर की लता, लौकी, तोरी 2. मोतियों की लड़ी 3. रूपवती नारी, सुंदर स्त्री 4. एक समवर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में 18 वर्ण होते हैं जिनमें क्रम से 2 नगण, रगण, भगण 2 रगण होते हैं तथा 10-8 पर यति होती है।

लताकुंज पुं. (तत्.) घनी लताओं से घिरा वह स्थान जो छाये हुए मंडप जैसा लगे जिसकी घनी छाया में उसके नीचे प्रायः नवयुगल बैठकर विश्राम करते हैं, लता मंडप, लतागृह।

लताड़ स्त्री. (देश.) 1. किसी को लताड़ने की क्रिया या भाव 2. किसी के अनुचित व्यवहार या कर्म के कारण उसके प्रति की जाने वाली तीखी डाँट-डपट, फटकार, झिड़की 3. भर्त्सना, धिक्कारना।

लतापाश पुं. (तत्.) 1. लताओं का फैला हुआ जाल 2. लताओं का झुंड, लतासमूह।